अभिनन्दन पर्व

2021

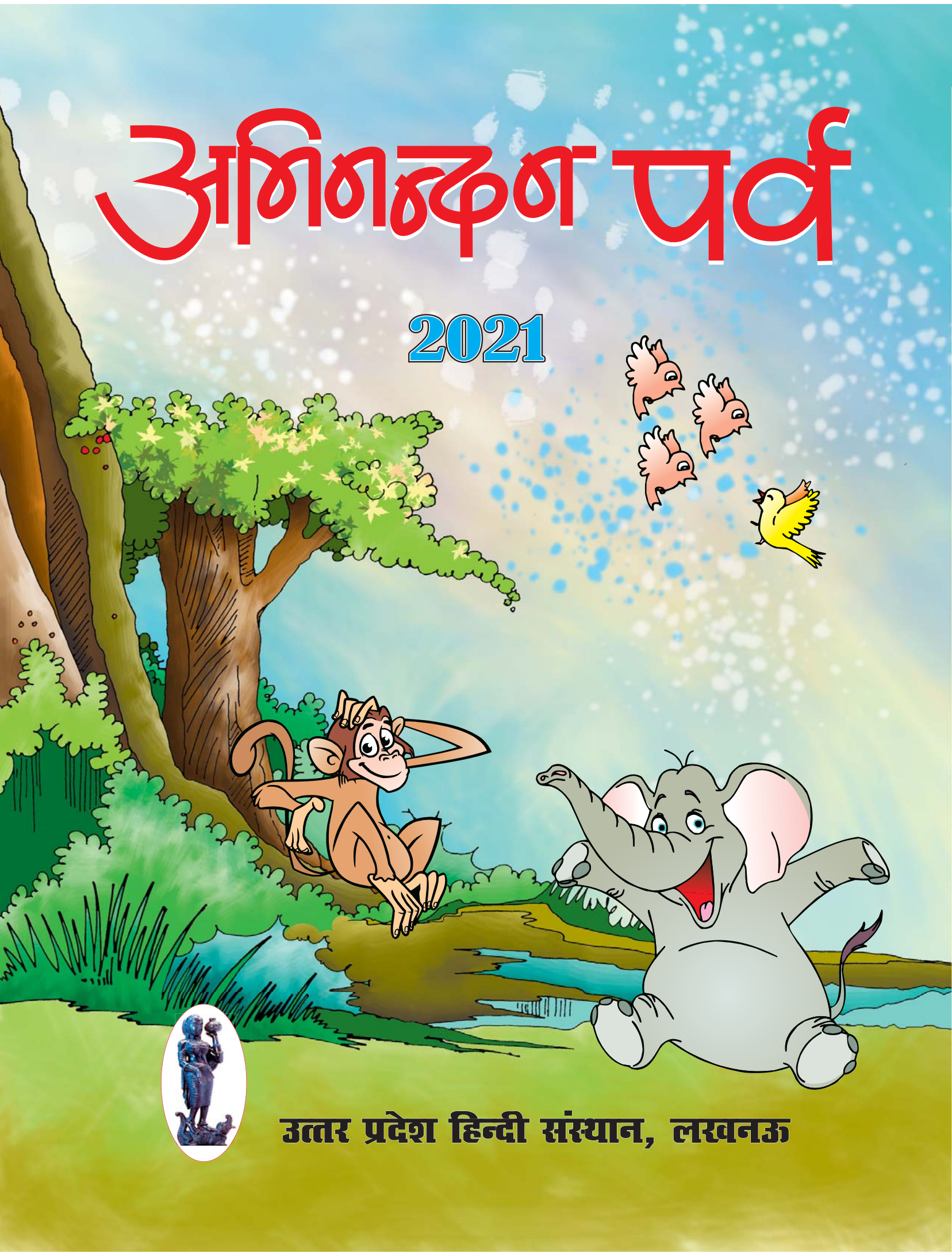

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

श्री योगी आदित्यनाथ

मा. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

एवं

अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

अभिनन्दन पर्व
2021

अन्य पदाधिकारी

श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह
वरिष्ठ वित्त एवं लेखाधिकारी

डॉ. अमिता दुबे
प्रधान सम्पादक

श्री प्रदीप कुमार दुबे
पुस्तकालय अध्यक्ष

श्री श्याम कृष्ण सक्सेना
वरिष्ठ सहायक

श्री विनोद कुमार
कनिष्ठ सहायक

शुक्रवार 25 नवम्बर, 2022

अभिनन्दित बाल साहित्यकार
वर्ष 2021

सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान

श्रीमती विमला रस्तोगी, दिल्ली

सोहन लाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान

डॉ. अजय प्रसून (अजय कुमार द्विवेदी), लखनऊ

अमृत लाल नागर बाल कथा सम्मान

श्रीमती ममता नौगरैया, बदायूँ

शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान

श्री शिवाशीष शर्मा, अलीगढ़

लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान

डॉ. संजय वर्मा, गोरखपुर

डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान

डॉ. भातरेन्दु मिश्र, दिल्ली

कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान

श्री अंजीव अंजुम, मथुरा

जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान

डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह, बाराबंकी

उमाकान्त मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान

श्री ललित मोहन राठौर 'ललित शौर्य', बरेली

दो शब्द

यह हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है कि हम बच्चों को विकास का उचित वातावरण और सुयोग्य शिक्षा-दीक्षा देकर समाज को उन्नतिशील बनाने वाला निष्ठावान नागरिक बनाएं। बालक संस्कार ग्रहण करने में सबसे ज्यादा समर्थ होते हैं। उनका कौतूहल से भरा मन उपलब्ध रंग-रूपों, कल्पना और भावनाओं को सहज ही अपने चरित्र का अंग बना कर विकसित होता जाता है। ऐसे में किसी भी समाज की आधारभूत सफलता के आकलन के लिए सम्भवतः इससे अच्छा मापदण्ड दूसरा नहीं हो सकता कि वह बच्चों के चतुर्दिक विकास के लिए क्या कर रहा है, कैसे संसाधन उपलब्ध करा रहा है और विशेषकर नयी पीढ़ी को अध्ययन, अनुशासन व सदाचार जैसे सद्गुणों तथा प्रेम, शांति, सभी की खुशहाली और अन्य मानवीय मूल्यों से परिचित कराने के लिए कैसे सद्प्रयास उपलब्ध करा रहा है।

यही कारण है कि बाल्यकाल से सुसंस्कार और अनुशासित परिवेश के साथ ही उन्हें अनुकूल श्रेष्ठ बाल साहित्य की भी आवश्यकता होती है। भारतीय संस्कार और परिवेश से जुड़ी बाल साहित्य की महती आवश्यकता कम नहीं है। विज्ञान के विकास के साथ ही बाल मनोविज्ञान को दृष्टि में रख कर इस प्रकार का मनोरंजन से भरपूर प्रचुर साहित्य सभी भारतीय भाषाओं में लिखा जा रहा है। राष्ट्रभाषा हिन्दी भी अब इस दृष्टि से बहुत समृद्ध है।

बाल साहित्य की इस प्रभावी भूमिका को देखते हुए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा हिन्दी भाषा एवं साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं के साथ ही साथ बाल साहित्य के संवर्द्धन और उन्नयन की अनेक योजनाएं प्रारम्भ की गयी हैं, जिनके अन्तर्गत बाल साहित्य लेखकों को प्रोत्साहित करने की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है। यह निर्विवाद है कि यदि बाल साहित्यकारों को समुचित प्रोत्साहन मिले तो बाल साहित्य की विविध विधाओं में प्रचुर लेखन हो सकेगा और बच्चों का सुरुचिपूर्ण साहित्य सरलतापूर्वक उपलब्ध हो सकेगा। संस्थान के इस लक्ष्य के अन्तर्गत बाल साहित्य सृजन और प्रकाशन योजनाओं को कार्यरूप में परिणत तो किया ही जाता है, बाल साहित्य से सम्बन्धित समारोह भी समय-समय पर आयोजित किये जाते हैं ताकि पारस्परिक विचार-विमर्श का मंच उपलब्ध हो और अखिल भारतीय स्तर पर बाल साहित्य की अभिवृद्धि के लिए व्यापक प्रयास संभव हो सकें।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा बाल साहित्य पर 'बाल साहित्य भारती सम्मान', 'सूर नामित पुरस्कार' तथा 'सोहन लाल द्विवेदी सर्जना पुरस्कार' प्रदान किये जाते रहे हैं किन्तु बाल साहित्य को

अधिक प्रोत्साहन दिये जाने के संदर्भ में बाल साहित्य की विविध विधाओं में भी एक-एक रचनाकार को प्रतिवर्ष सम्मानित/अभिनंदित किया जाता है। सन् 1993 में ऐसे पांच साहित्यकार सम्मानित किये गये थे। उन्हें 'पं. सोहनलाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान', 'डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान', 'लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान', 'अमृतलाल नागर बाल कथा सम्मान' और 'कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान' से अभिनंदित किया गया था। सन् 1994 में तीन सम्मान और बढ़ाये गये। ये हैं - 'शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान', 'सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान' तथा 'उमाकांत मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान'। सन् 1995 में भी दो सम्मान और बढ़े जो इस प्रकार हैं - 'निरंकार देव सेवक बाल साहित्य इतिहास लेखन सम्मान' और 'जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान'। दस दिवंगत बाल साहित्यकारों की स्मृति को समर्पित इन सम्मानों का क्रम विभिन्न कारणों से लगभग दो दशकों तक बाधित रहा। वर्ष 2014 से इनका फिर से शुभारम्भ किया गया है। इस क्रम में वर्ष 2013 के लिए दस बाल साहित्यकारों, वर्ष 2014 के लिए नौ साहित्यकारों, वर्ष 2015 के लिए नौ साहित्यकारों, वर्ष 2016 में पांच साहित्यकारों, वर्ष 2017 के लिए सात साहित्यकारों, वर्ष 2018 के लिए नौ साहित्यकारों, वर्ष 2019 के लिए नौ साहित्यकारों तथा वर्ष 2020 के लिए सात साहित्यकारों को अभिनंदित किया गया था। इस वर्ष 2021 के लिए नौ बाल साहित्यकारों को विभिन्न पुरस्कारों से समादृत किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने जिस बाल साहित्य संवर्द्धन योजना का सूत्रपात किया है, उससे बाल साहित्य के बहुआयामी विकास की गति एवं प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा और बाल साहित्यकारों का आत्मीय सहयोग एवं समर्थन सतत उपलब्ध रहेगा। सम्मानित बाल साहित्यकारों को हार्दिक बधाई देते हुए आशा करता हूँ कि वे नई ऊर्जा और स्फूर्ति के साथ बाल साहित्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे। एक ऐसा योगदान जो नयी पीढ़ी को ही अनंत सम्भावनाओं का साक्षी नहीं बनायेगा अपितु महान भारत को भी गौरवान्वित करेगा।

आर.पी. सिंह
आई.ए.एस.
निदेशक

प्रेरक प्रतिभाएँ

(जिन महान बाल साहित्यकारों की स्मृति में संस्थान द्वारा सम्मान दिये जा रहे हैं, उन विभूतियों का संक्षिप्त परिचय)

❖ **सुभद्रा कुमारी चौहान** – सन् 1904 की नागपंचमी (16 अगस्त) को प्रयाग के निहालपुर मोहल्ले में जन्मीं सुभद्रा कुमारी 4-5 वर्ष की बाल्यावस्था से तुकबन्दियाँ रचने लगी थीं। प्रयाग की प्रसिद्ध पत्रिका 'मर्यादा' ने सन् 1913 में जब आपकी 'नीम' कविता प्रकाशित की थी, तब आपका नाम सुभद्रा कुँवरि था और आयु भी मात्र 9 वर्ष। सन् 1919 में सुभद्रा का विवाह खण्डवा के युवा लेखक/पत्रकार लक्ष्मण सिंह चौहान से हुआ। 'बालिका का परिचय', 'मेरा नया बचपन' तथा 'इसका रोना' जैसी बालिकाओं के प्रति अकाट्य पक्षधरता वाली बेजोड़ कविताओं के अलावा उनकी 'झाँसी की रानी' कविता तो उनके समय से ही लोगों के 'कण्ठों में बसी कविता' के रूप में प्रसिद्ध है। आपने कहानियाँ भी लिखीं और एक पत्रिका 'महिमा' का सम्पादन भी किया। सुभद्रा जी ने शिशुगीतों समेत अनेक बाल कविताएँ लिखी हैं। 15 फरवरी, 1948 को सुभद्रा कुमारी चौहान का आकस्मिक निधन हो गया।

❖ **सोहन लाल द्विवेदी** – बच्चों के अत्यंत लोकप्रिय कवि तथा प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक सोहन लाल द्विवेदी का जन्म सन् 1904 में फतेहपुर के प्रसिद्ध कस्बे बिन्दकी में हुआ था। आपने 'बालसखा' और 'शिशु' बाल पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। 'शिशु भारती', 'दूध बताशा', 'बाँसुरी बिगुल', 'बच्चों के बापू', 'हँसो हँसाओ' व 'शिशुगीत' आदि आपकी चर्चित बालकाव्य पुस्तकें हैं। भारत सरकार ने आपको पद्मश्री सम्मान से समादृत किया था। आपका निधन सन् 1988 में हुआ।

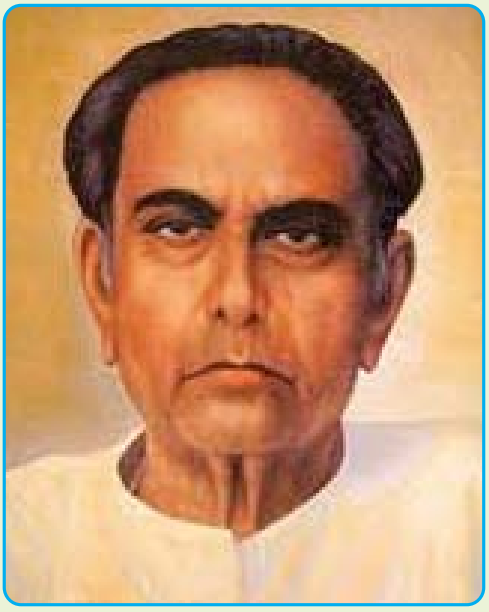

❖ **अमृतलाल नागर** – बच्चों के लिए मनभावन कहानियाँ, उपन्यास, रेडियो नाटक आदि 50 वर्षों से भी ज्यादा समय तक लिखते रहे। अमृतलाल नागर का जन्म 16 अगस्त, 1916 को ननिहाल आगरा में हुआ था। उन्होंने पहली रचना कविता के रूप में लिखी थी, जो चौक, लखनऊ से प्रकाशित प्रसिद्ध अखबार 'आनन्द' में छपी थी। 'नटखट चाची' (कहानी), 'आ जा निंदिया' (लोरी), 'बजरंगी-नौरंगी' व 'बजरंगी पहलवान' आदि कहानियों, कविताओं व उपन्यासों की आपकी एक दर्जन से ज्यादा किताबों में 'बाल महाभारत' छः खण्डों में बाल पॉकेट बुक्स में 1970 में छपा था। आपका समग्र बाल साहित्य सन् 2011 में 'सम्पूर्ण बाल रचनाएँ : अमृतलाल नागर' शीर्षक से प्रकाशित हो चुका है। 23 फरवरी, 1990 को अमृतलाल नागर का लखनऊ में देहावसान हुआ।

❖ **शिक्षार्थी** – बाल साहित्यकार और व्यंग्य चित्रकार के रूप में समान रूप से प्रसिद्ध शिक्षार्थी का जन्म सन् 1918 में सुलतानपुर में हुआ था। बचपन से ही साहित्य और चित्रकला में रुचिशील शिक्षार्थी की आगे चलकर व्यंग्य चित्रांकन विषय पर एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई। सन् 1948 में आपके द्वारा सम्पादित बाल पत्रिका 'लल्ला' बच्चों के बीच बहुत लोकप्रिय रही है। बच्चों की रचनाएँ प्रकाशित करके शिक्षार्थी जी उनके नाम का व्यंग्य चित्रात्मक लेटर पैड प्रोत्साहनार्थ पुरस्कार स्वरूप भेजते थे। किलकारी, बन्दर का नाच, गाथा गुल्लक, मन मन मन, छोटू-मोटू आदि शिक्षार्थी जी की बच्चों के लिए प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। सन् 1981 में इलाहाबाद में आपका निधन हुआ।

❖ **लल्ली प्रसाद पाण्डेय** – हिन्दी में सबसे ज्यादा अवधि तक प्रकाशित होती रही बच्चों की पत्रिका 'बालसखा' (इण्डियन प्रेस, प्रयाग से 1976 में प्रकाशित) से सहयोगी सम्पादक तथा सम्पादक के रूप में भी जुड़े रहे। श्री पाण्डेय का जन्म 1886 में सानोदा ग्राम (सागर-म.प्र.) में हुआ था। 'हिन्द केसरी' (नागपुर) तथा 'कलकत्ता समाचार' के सम्पादकीय सहकर्मी रहे। 'बालसखा' में अपने नाम से कम, परन्तु छद्म नामों से अधिक रचनाएँ लिखी। संस्कृत, हिन्दी, मराठी व बंगला भाषाओं के ज्ञाता पाण्डेय जी की अनुवादित पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। लगभग 90 वर्ष की आयु में प्रयाग में ही आपका निधन हुआ।

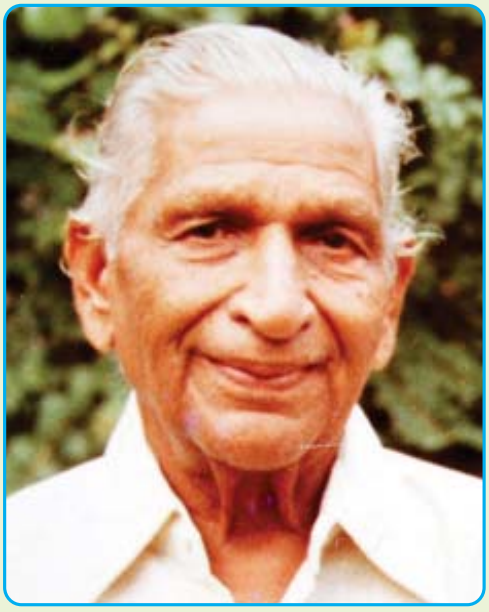

❖ **डॉ. रामकुमार वर्मा –** डॉ. रामकुमार वर्मा का जन्म सन् 1905 में मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त कर वहीं के हिन्दी विभाग में आप प्राध्यापक हुए और विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए। आपने बच्चों के लिए मुख्यतः एकांकी और बालकविताएं लिखीं। आपकी बाल कविताएं पांच भागों में 'शिशु शिक्षा' शीर्षक से प्रकाशित हुई थीं। पूर्व सोवियत संघ और श्रीलंका में आप शिक्षण कार्य हेतु भी गये थे। डॉ. रामकुमार वर्मा का निधन वर्ष 1990 में हुआ।

❖ **कृष्ण विनायक फड़के –** मराठी भाषी होते हुए हिन्दी के हृदय प्रदेश कानपुर में आकर बच्चों की शिक्षा और कल्याण के लिये आजीवन समर्पित रहने वाले फड़के जी का जन्म 19वीं सदी के आखिरी दशक में हुआ था। सन् 1921 में जब प्रेमचन्द मारवाड़ी स्कूल, कानपुर में हेड मास्टर थे, उससे पहले से ही आप वहां शिक्षण-प्रवृत्त थे। बालशिक्षा और बालकल्याण कार्यों के प्रति फड़के जी की निष्ठा तथा समर्पण ने प्रेमचन्द को बहुत प्रभावित किया था। बच्चों के जीवन, शिक्षा और दर्शन पर फड़के जी ने समय-समय पर छोटी-छोटी पुस्तकें और बालोपयोगी संग्रहों का प्रकाशन किया। कानपुर ही अन्ततः इस सबके लिये आपकी कर्मभूमि बन गया और सेवानिवृत्ति के बाद भी मृत्यु-पर्यन्त आप बच्चों को जुटाकर उन्हें कहानियाँ-कविताएं सुनाते, उन्हें प्रसन्न-मन 'कम्पट' (मीठी गोलियाँ-लेमनचूस आदि) बाँटते, सुख का अनुभव करते थे। आपके लेखन और संग्रह का व्यवस्थित प्रकाशन नहीं हो सका। आठवें दशक के अन्त में कृष्ण विनायक फड़के का देहान्त कानपुर में हुआ।

❖ **जगपति चतुर्वेदी –** बच्चों के लिए पूरे जीवन विज्ञान-लेखन के लिए समर्पित जगपति चतुर्वेदी का जन्म सन् 1904 में बलिया, उ.प्र. के आस चौरा में हुआ था। स्फुट बाल विज्ञान लेखन के क्रम में 'पृथ्वी के अन्वेषण की कथाएँ' (1928) आपकी पहली बहुचर्चित पुस्तक थी, जिसने उन्हें सर्वप्रथम व्यापक रूप से नाम, पैसा और प्रसिद्धि एक साथ दी। सन् 1930 से 36 तक जगपति चतुर्वेदी जी ने बाल विज्ञान विषयक पुस्तकें लिखते हुए अपने प्रकाशन से प्रकाशित की थीं। उ.प्र. के तत्कालीन शिक्षाधिकारी रहे पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी ने 1941 में शिक्षा प्रसार विभाग के लिए 'आदमी की कहानी' और 'धरती माता' पुस्तक विशेष रूप से लिखवायी थी, जिसका किताब महल, इलाहाबाद ने 50 पुस्तकों की 'सरल विज्ञान माला' शृंखला में प्रकाशन किया। आप विज्ञान परिषद, इलाहाबाद की 'विज्ञान' पत्रिका के सम्पादन से भी जुड़े रहे। आपका निधन सन् 1981 में इलाहाबाद में हुआ।

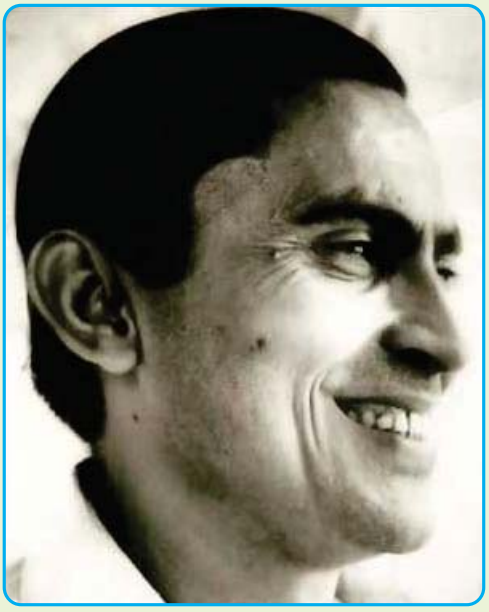

❖ **उमाकान्त मालवीय** – बच्चों के लिए रोचक बाल नाटक, बाल कविताएँ, पद्य कथाएं आदि निरन्तर लिखने वाले मालवीय जी का जन्म सन् 1931 में बम्बई में हुआ था। इलाहाबाद में पढ़ाई के साथ ही आपको साहित्यिक लेखन का वातावरण मिला। आपकी रचनाएं धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, पराग, बाल भारती, नन्दन एवं प्रायः सभी अखबारों में छपती रही हैं। 'चन्दा की माँ', 'पद्यरूपक संग्रह', 'बजी रण भेरी', 'फूलों की समा', 'मोम की कुर्सी' आदि आपकी पुस्तकें बच्चों में बहुत लोकप्रिय थीं। सन् 1982 में असमय ही आपका निधन हो गया।

❖ **निरंकार देव सेवक** – बच्चों के लिए पचास से अधिक पुस्तकों के रूप में बाल कविताएँ, बालगीत, पद्यकथाएँ आदि लिखते रहने वाले समर्पित बाल साहित्य साधक निरंकारदेव सेवक का जन्म 1919 में बरेली में हुआ था। आपकी 'हिन्दी बालगीत' (1966) पुस्तक 20 वर्षों से भी अधिक समय के शोधपूर्ण-श्रम का परिणाम थी। संशोधित-परिवर्तित 'बालगीत साहित्य' (इतिहास एवं समीक्षा) शीर्षक से इसका प्रकाशन उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने 1983 में किया था। बिल्ली के गीत, नन्हें मुन्ने गीत, रिमझिम, ईसप की गीत कथाएँ, माखन मिसरी आदि आपकी प्रसिद्ध बाल काव्य पुस्तकें हैं। बाल साहित्य के विकास और संवर्द्धन में सेवक जी आजीवन संलग्न रहे। सन् 1994 में बरेली में सेवक जी दिवंगत हुए।

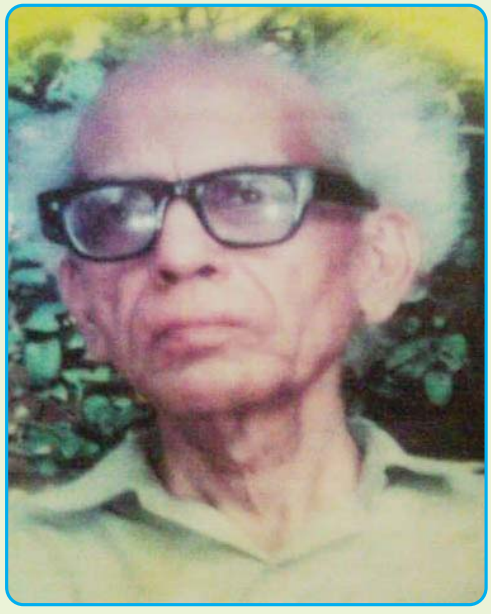

❖

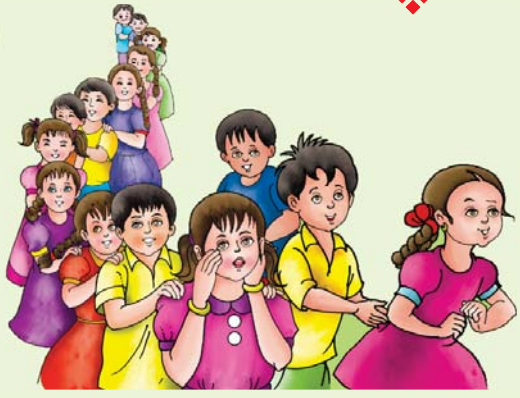

श्रीमती विमला रस्तोगी

बाल साहित्य सृजनधर्मी, निष्ठावती बाल साहित्य लेखन में मिशनवत आसन्न विगत अर्द्धशताब्दी से अधिक समय से बाल साहित्य की प्रतिबद्धता की प्रतीक मानी जाने वाली श्रीमती विमला रस्तोगी का जन्म 10 जुलाई, 1947 को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जनपद की संभल तहसील में हुआ। आपने हिन्दी साहित्य एवं अर्थशास्त्र विषयों में परास्नातक की उपाधि प्राप्त की।

आप छात्रा जीवन से ही अपनी जन्मजात प्रतिभा को बाल कविता का मोहक रूप प्रदान करने की दिशोन्मुख हुईं। बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न विमला रस्तोगी जी के साहित्य की हर विधा में सशक्त हस्ताक्षर विद्यमान हैं। श्रीमती विमला रस्तोगी का मौलिक सृजन अनेक चर्चित कृति रूपों में प्रकाश में आ चुका है। प्रकाशित कृतियाँ - सिस्टर निवेदिता (जीवनी), विश्व की श्रेष्ठ लोक-कथाएँ, मणि की परख, सपनों का संसार (बाल कहानी), बाल गीत संग्रह, बाल नाटक संग्रह,बाल एकांकी संग्रह आदि।

आपके बाल साहित्य में सुसंस्कारों की संदेशात्मकता, बालचरित्र-सृजन व निर्माण की संभावनाओं की प्रबलता होने के कारण बेसिक शिक्षा की प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ कक्षाओं के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

अपने समय की प्रतिष्ठित व लोकप्रिय बाल एवं महिला पत्रिकाओं में ही नहीं बल्कि देश के स्तरीय व गौरवशाली साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर आपकी सुरुचिपूर्ण रचना का प्रकाशन होता रहता है। सम्पादन व पत्रकारिता क्षेत्र भी आप से अछूता नहीं रहा है। आपने दो साहित्यिक पत्रिकाओं के सम्पादक मंडल में भी अपनी उपस्थिति अभिलेखित की है।

आपकी बाल साहित्यिक प्रतिभा के पीछे आपका बाल साहित्य व बच्चों से विशेष अनुराग के अतिरिक्त प्रकृति से विशेषकर पुष्पों से नैसर्गिक लगाव का होना है। साथ ही इससे उपजे मनोविज्ञान के शब्दाक्षरों को स्याही में डुबोकर कागज पर सजा देना ही श्रीमती विमला रस्तोगी का साहित्य सृजन है। श्रीमती विमला रस्तोगी बाल साहित्य के क्षेत्र में अपने प्रशस्य अवदान के लिए बहुविध सम्मानित पुरस्कृत हुई हैं। देश-प्रदेश की लगभग दर्जन भर गैर सरकारी संस्थाओं ने आपको सम्मानित कर स्वयं को गौरान्वित अनुभव किया है।

श्रीमती विमला रस्तोगी की कहानी 'छोटी-छोटी बातें', 'दिशाहीन', प्रेरणा में प्रतिभा-प्रखरता के आधार पर अलग-अलग गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत होना आपकी रचनाधर्मिता की उच्च गुणवत्ता का स्वयंसिद्ध प्रत्यक्ष प्रमाण है। सृजित व प्रणीत रचनाओं में अप्रतिम प्रतिभा का प्रत्याशित प्रमाण का मूल्यांकन कर चार गैर सरकारी संस्थाओं ने श्रीमती विमला रस्तोगी जी को पुरस्कृत किया है। हिन्दी बाल साहित्य जगत में मील का पत्थर समझे जाने वाले उल्लेखनीय आधा दर्जन से अधिक कहानी एवं एकांकी संग्रह में क्रमशः आपकी कहानी व एकांकी को सम्मिलित किया गया है।

इस क्रम में आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र व विदेश सेवा विभाग से साहित्य की विभिन्न विधाओं में कई सौ रचनाएँ-वार्ताएँ प्रसारित हैं, दूरदर्शन का दिल्ली केन्द्र साहित्य बाल कहानियां व कविताओं का प्रसारण करने में अग्रणी रहा साथ ही दूरदर्शन पर होने वाली प्रभावपूर्ण परिचर्चाओं में भी आपकी सहभागिता रही।

श्रीमती विमला रस्तोगी लोकप्रिय दूरदर्शन धाराविक में सुप्रसिद्ध लेखकों के मध्य बहुमुखी प्रतिभा के कारण अपनी अलग पहचान बनने में सफल रही हैं। साक्षात्कार विधा के अन्तर्गत सिने जगत व दूरदर्शन के कलाकारों के आप द्वारा किये साक्षात्कारों का प्रकाशन भी हुआ है।

बाल साहित्य के संवर्द्धन व प्रोत्साहन के क्रम में बाल पत्रिकाओं के सम्पादन में भी आपकी सराहनीय भूमिका रही है। आप अपनी सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन के तहत कई सामाजिक एवं महिला संस्थाओं की पदाधिकारी रह कर समाजोन्मुखी कार्यों में संलग्न रही हैं। समय-समय पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) एवं केन्द्रीय शिक्षा एवं तकनीक परिषद (सी.ई.आई.टी.) द्वारा आयोजित होने वाली कार्यशाला व सेमिनार में आपकी महत्वपूर्ण सहभागिता रही है।

श्रीमती विमला रस्तोगी को उत्कृष्ट बाल साहित्य सृजन के लिए 'सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- 'आयाम', 127, गगन विहार,
दिल्ली-110051
मोबाइल : 9811298893

डॉ. अजय प्रसून
(अजय कुमार द्विवेदी)

अनागत कविता के प्रणेता व प्राणवन्त हस्ताक्षर बाल कविता के उन्नायक, अनवरत साधनारत, बाल साहित्य सर्जक मौलिक संस्कार-मानवीय मूल्यों की बाल हृदय में स्थापना करने वाले काव्य के रचयिता डॉ. अजय प्रसून का जन्म 18 जनवरी, 1945 में लखनऊ में माँ श्रीमती कांती व पिता श्री सरोज कुमार द्विवेदी के पुत्र के रूप में हुआ।

आपने होम्योपैथी चिकित्सा में स्नातक और हिन्दी में परास्नातक की उपाधि प्राप्त की। बाल कविता के क्षेत्र में डॉ. अजय प्रसून जी के मौलिक काव्य ग्रन्थ हैं :-

बाल-काव्य - गाओ गीत सुनाओ गीत (उ.प्र. शासन द्वारा पुरस्कृत), बच्चों की प्यारी कविताएँ, बच्चे गायें गीत, बच्चो! शिष्टाचार न भूलो।

अनागत काव्य/गजल/गीत - बाँसुरी की भीतरी सतह, दर्पण शिलालेख हो जाये, आँसुओं का बयान जारी है, कालजयी हम प्यास लिये, महानगर के बीच (हिन्दी गजल), युग के आँसू (खंडकाव्य), श्री हनुमान अस्सीसा, श्री शनि अस्सीसा।

बाल कविता के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अवदान के अतिरिक्त काव्य की विभिन्न विधाओं जैसे ग़ज़ल, गीत, नवगीत, मुक्त छंद, अवधी लोकगीत की रचना में भी आपकी बहुविध काव्य प्रतिभा मुखर हुई है। अनागत कविता प्रवर्तन भारतीय दर्शन और संस्कृति आधारित सकारात्मकता से जनमानस का परिचय कराने की ऊर्जा से ओत प्रोत है। इस उद्देश्य की पूर्ति एवं आधार मंच प्रदान करने की बलवती भावना से अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान की स्थापना का स्तुत्य कार्य कर उसके संस्थापक अध्यक्ष बन अपने साहित्यिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन मनोयोग से करने में सफल हैं, जिसके माध्यम से साहित्योन्नयन एवं साहित्यिक प्रतिभाओं का प्रोत्साहन भी दे रहे हैं जोकि आपके साहित्यिक व्यक्तित्व का विशेष चारित्रिक गुण है।

सम्पादन का क्षेत्र में भी आपने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है :-

डॉ. अजय प्रसून ने त्रैमासिक पत्रिका ताम्रपर्णी एवं शोधसंद पत्रिका नूतनवाग्धारा के (अनागत कविता आन्दोलन : नई सुबह की आहट) के अतिथि सम्पादन के रूप से योगदान दिया है।

आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्रों से काव्य पाठ व रचनाओं का प्रायः प्रसारण, आपके स्वरचित गीतों से विगत चार दशाब्दियों से अधिक समय से साहित्य सर्जक डॉ. अजय प्रसून जी की गणना आज ख्याति प्राप्त कवियों में होती है।

काव्य के उन्नयन प्रचार-प्रसार व लोकप्रिय सर्वसुलभ बनाने के क्रम में समयानुसार सामाजिक नेटवर्किंग पटलों पर आन लाईन काव्य गोष्ठियों के आयोजन में नवागत और नव काव्य सर्जकों को स्थान देकर साहित्य की श्रीवृद्धि करने-कराने में आपके प्रशंस्य प्रयास व संलग्नता महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी कविताई को प्रोत्साहन देने में डॉ. अजय प्रसून जी की सक्रियता प्रशंसनीय व अनुशंसनीय है।

बाल साहित्य की कविता विधा में महत्त्वपूर्ण अवदान को देखते हुए डॉ. अजय प्रसून (अजय कुमार द्विवेदी) को 'सोहन लाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- मां लक्ष्मी होम्योपैथिक क्लीनिक
528/द्वितीय/318 योगी नगर, त्रिवेणी नगर
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020
मोबाइल : 9305107455

श्रीमती ममता नौगरैया

सुकोमल भावनाएँ, प्रकृति और मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता युक्त व्यक्तित्व को उसका चित्त ही समाज के अति निकट लाकर साहित्यकार, समाजसेवी बना देता है। वात्सल्य, ममता और ममत्व से भरा नारीमन का मनोविज्ञान और बाल मनोविज्ञान में एकरूपता और सामंजस्य ही नारी को सफल प्रभावी बाल साहित्यकार में रूपान्तरित करते हैं। 11 जून, 1956 को जबलपुर (सतना) मध्य प्रदेश में जन्मीं श्रीमती ममता नौगरैया हिन्दी साहित्य जगत की सशक्त हस्ताक्षर हैं। हिन्दी साहित्य सृजन व साहित्यानुराग राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त व सियाराम शरण गुप्त के परिवार से सम्बद्धता विरासती संस्कार में प्राप्त है। फिर भी साहित्यिक विरासत प्रेरक की प्रेरणा के तहत तप, साधना, लगन और वांछित पुरुषार्थ के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा करने के बाद ही किसी भी उत्तराधिकारी को साहित्यिक विरासत प्राप्त होती है। ममता नौगरैया जी को भी विरासत में यदि कुछ प्राप्ति हुई भी है, तो उसके लिए भी आपकी कठोर साहित्यिक श्रम साधना का फलीभूत होना ही कहलायेगा।

ममता नौगरैया ने होम साइंस कॉलेज, जबलपुर से स्नातक उपाधि प्राप्त की। ममता नौगरैया के चित्त में साहित्य और प्रकृति के प्रति रुचि जन्मजात रही है। छात्र जीवन से ही ममता जी की सहभागिता सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रही है। हृदयस्थ कोमल भावनाओं के वशीभूत प्रकृति का संवरण करते हुए प्रकृति प्रेमपथ गमन करते हुए आपके सुकर्मों ने अनेक बार समाज में आपके सम्मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि की।

ममता नौगरैया का लेखन के प्रति रुझान बाल्यावस्था से ही रहा है। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ निरंतर प्रकाशित होती रही हैं। ज्ञातव्य है कि आज आपकी तीन दर्जन से भी अधिक प्रकाशित कृतियां हैं और लगभग दस पुस्तकें मुद्रणाधीन हैं।

ममता नौगरैया की बाल कृतियाँ :- मनोरंजक कहानियाँ, अनमोल कहानियाँ, रोचक पहेलियाँ, चरित्र निर्माण कथाएँ, पशु पक्षियों की कहानियाँ, प्रेरक कहानियाँ, शिक्षाप्रद कहानियाँ, रामायण बाल प्रश्नोत्तरी, महाभारत बाल प्रश्नोत्तरी, पर्यावरण बाल प्रश्नोत्तरी, सुभाष चन्द्र बाल प्रश्नोत्तरी, नैतिक ज्ञान कथाएँ, देवी देवताओं की कथाएँ, परियों की जादुई कथाएँ, चन्द्र शेखर आजाद, शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, साहसिक बाल

कहानियाँ, मन की बात : नरेन्द्र मोदी, ममता दादी की कहानियाँ, ममता दादी की कविताएँ, कलरिंग बुक, क्रिएटिव बुक, कोरोना काल : लॉकडाउन, मेड इन इंडिया, बच्चों में लीडरशिप, वीर बालाएँ।

ममता नौगरैया की कृतियाँ :- हिन्द-ए-आजम, योगी आदित्यनाथ : सबके साथ महिला सशक्तिकरण, कारगिल के शहीद भाग-1, स्वच्छ पर्यावरण, राष्ट्रपति कोविंद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय, वृद्धावस्था : जीने का आनंद, मानव जाति का दुश्मन : प्रदूषण, बुन्देली लोक गीत, नरेन्द्र मोदी : साफ नियत-सही विकास, जल संरक्षण, राष्ट्रीय दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय दिवस, मेरी कविताएँ, महाकुम्भ 2019, महापुरुषों की कथाएँ, प्रतिभाशाली महिलाएँ, एक कदम सफलता की ओर, सब कुछ संभव है, पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि आदि।

ममता नौगरैया सामाजिक कार्यों के कारण समाज के प्रत्येक वर्ग से संलग्न हैं। समाज के प्रति कर्तव्यों व उत्तरदायित्व के निर्वहन की भावना के तहत अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं के मंचों से अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं। कई स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में आपको संरक्षक मंडल में यथोचित स्थान प्राप्त है। आपकी साहित्य के प्रति सेवा और समर्पण को दृष्टिगत प्रतिष्ठित संस्था 'समकालीन महिला साहित्य मंच' द्वारा 'महिला साहित्य सृजन सम्मान' से सम्मानित भी किया गया है। इंडियन रिकॉर्ड बुक 2020 के लिए भी आपका नाम चयनित है।

ममता नौगरैया की सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागिता रुचिपूर्वक रहती है। साथ ही विद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थानों पर पर्यावरण, स्वच्छता, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ! आदि विषयों पर कार्यशालाएँ, सेमिनार भी आयेजित कराती हैं। बाल पाठकों की रुचि तथा उनके चारित्रिक व सर्वांगीण विकास के दृष्टिकोण से आपने श्रेष्ठानुकूल बाल साहित्य का सृजन किया है। श्रीमती ममता नौगरैया ने बाल मनोविज्ञान को सतत समझने की कोशिश की है और आधुनिक आवश्यकतानुसार बाल साहित्य सृजन किया है।

बाल कथा साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए श्रीमती ममता नौगरैया को 'अमृतलाल नागर बाल कथा सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- नियर स्टेट बैंक मुख्य शाखा, जोगीपुर,
बदायूँ-243601(उ.प्र.)
मोबाइल : 9412601219, 8475938546

श्री शिवाशीष शर्मा

मानवीय संवेदनाओं भावनाओं और सामाजिक चित्रण की अभिव्यक्ति का सार्थक माध्यम है चित्रकला या चित्राभिव्यक्ति, जो कि लिपि के अन्वेषण से पूर्व ही मानव सभ्यता की अभिव्यक्ति का दृढ़ आधार था। सुविख्यात देवाशीष शर्मा का जन्म 7 नवम्बर, 1986 को अलीगढ़ उत्तर प्रदेश में हुआ। 6 वर्ष की अवस्था से ही आपकी चित्रकला प्रतिभा स्फुटित हो गई थी। मात्र 10 वर्ष की आयु में ही जन्माष्टमी पर्व पर आपकी बनायी भगवान श्रीकृष्ण की तस्वीर दिल्ली के प्रसिद्ध समाचार पत्र 'संध्या टाईम्स' में प्रकाशित आपकी प्रथम कलाकृति थी।

मात्र सात दिनों में सिक्खों के 24 गुरुओं की 12 फीट चौड़ी 6 फीट ऊँची आपकी बनाई आयल पेंटिंग की भारत के प्रधान मंत्री द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी।

श्री शिवाशीष शर्मा जी ने पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी की पेंटिंग बनाकर उन्हें भेंटकर प्रशंसा प्राप्त की। श्री शिवाशीष शर्मा स्वच्छ भारत मिशन के लिए भी कार्य कर चुके हैं।

आपको एक निजी शिक्षण संस्था द्वारा सर्वश्रेष्ठ चित्रकला शिक्षक का पुरस्कार व दिल्ली की चित्रकला संस्था द्वारा वर्ष का सर्वश्रेष्ठ कलाकार का राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। बालोपयोगी चित्रकला के प्रति आपका समर्पण सराहनीय है।

बाल चित्रकला के क्षेत्र में श्री शिवाशीष शर्मा के महत्वपूर्ण अवदान हेतु 'शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- 8/42, लक्ष्मीपुरी, सराय हकीम,
अलीगढ़-202001 (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल : 7417460804, 9897067276
ई-मेल : shivasheesh-sharma@gmail.com

श्री संजय वर्मा

श्री संजय वर्मा का जन्म 9 नवम्बर, 1964 को राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त स्वतन्त्र खेल समीक्षक सम्पादक-समाजसेवी व शिक्षाविद् श्री शंकर शरण वर्मा के घर में हुआ।

श्री संजय वर्मा ने कम्प्यूटर विज्ञान, अर्थशास्त्र, पत्रकारिता में परास्नातक की उपाधि के अतिरिक्त पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, फोटोग्राफी, विज्ञान पत्रकारिता में डिप्लोमा की उपाधियाँ भी प्राप्त की हैं। आप विगत बत्तीस वर्षों से देश के प्रमुख ख्याति प्राप्त समाचार पत्रों व विज्ञान पत्रिकाओं से बतौर विज्ञान/खेल लेखक व पत्रकार के रूप में सम्बद्ध हैं।

प्रकाशित कृतियाँ :-

विज्ञान कोश एवं सामान्य विज्ञान, अग्नि मिसाइल, विज्ञान पत्रकारिता, अन्तर्राष्ट्रीय खेल एवं भारत, खेल पत्रकारिता, धरोहर, भगवन चित्रगुप्त पूजन एवं माहात्म्य आदि।

खेल समीक्षक/वार्ताकार के रूप में श्री वर्मा सन् 1990 से आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्र (गोरखपुर) से सम्बद्ध रहे हैं एवं विगत लगभग 25 वर्षों से खेल रिपोर्ट/विशेष खेल बुलेटिन/खेल साक्षात्कार/समीक्षा/आकलन की प्रस्तुति एवं वाचन आपके द्वारा किया गया।

विगत चालीस वर्षों से गोरखपुर (उ.प्र.) में अपने दादा जी की स्मृति में अधानन्द वर्मा मेमोरियल फुटबाल प्रतियोगिता आयोजन के सह-संयोजक/मीडिया प्रभारी की सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं।

गोरखपुर के गैर सरकारी राष्ट्रीय स्तर के खेल संगठनों द्वारा आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में सक्रियता सह-संयोजक एवं मीडिया प्रभारी के रूप में आप सक्रिय हैं। खेल स्पर्धाओं के साहित्यिक प्रयास की परिधि में प्रकाशित खेल-स्मारिकाओं के सह-सम्पादक की भूमिका भी निभाते आये हैं। अपने पिता (सम्पादक, क्रीड़ा युग) के प्रिय राष्ट्रीय खेल हॉकी को गोरखपुर में विगत तीन दशक से अधिक वय से गोरखपुर में शंकर शरण (लाल बाबू) मेमोरियल ह की प्रतिस्पर्धा अध्यक्ष होने के साथ दर्जन भर क्षेत्रीय हॉकी व अन्य खेलों की प्रतियोगिताओं के आयोजन में श्री वर्मा की सक्रिय भूमिका रही है।

आप विज्ञान व खेल की अनेक मानक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। विज्ञान एवं खेल के क्षेत्र में आपके अप्रतिम योगदान व समर्पण को देखते हुए राष्ट्रीय स्तर की दर्जन भर से अधिक सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया है, जिनमें इन्दिरा गाँधी नेशनल अवार्ड, शिक्षक सम्मान, समाज रत्न सम्मान, चित्रगुप्त सम्मान, स्व. मुन्ना लाल पत्रकार स्मृति सम्मान, पूर्वांचल शीर्ष सम्मान, डॉ. सी.वी. रमन पुरस्कार, इसवा सम्मान, डॉ. बी.सी. देव विज्ञान लोकप्रियकरण/लेखन सम्मान आदि।

बाल साहित्य की पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन सम्पादन हेतु श्री संजय वर्मा को 'लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- 25, बक्शीपुर, गोरखपुर-273001 (उ.प्र.)

मोबाइल : 9452112461

डॉ. भारतेन्दु मिश्र

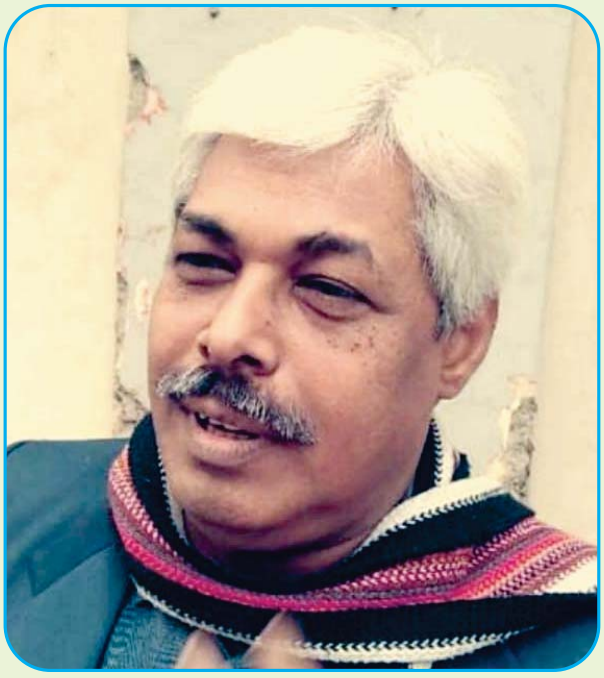

बाल साहित्य के अन्तर्गत बाल मनोविज्ञान को दृष्टि में रख कर किया गया साहित्यिक सृजन समाज की ढांचागत बुनियाद का निर्माण करने के साथ ही बालमन के लिए प्रेरक व अनुकरणीय होता है, यदि वह उपदेशात्मक शैली में न होकर मंचाभिनीत हो तो बालमन को शीघ्र प्रभावित करता है।

नाटक के माध्यम से बाल साहित्य की रचना करने वाले डॉ. भारतेन्दु मिश्र का जन्म लखनऊ में 5 नवम्बर 1959 को हुआ। डॉ. भारतेन्दु मिश्र बाल साहित्य की नाटक विधा में सन् 2003 से अद्यतन सतत सृजनरत हैं।

प्रकाशित कृतियाँ :-

बाल नाटक : दिल्ली चलो, लड़की की जात, मरे हुए लोग, पोनू का दाखिला, मंगल पांडे, रामदीन का भूत आदि।

बालयोगी अष्टावक्र (बाल उपन्यास), अधेड़ हो आयी है गोले (बाल कविताएँ) आदि। डॉ. भारतेन्दु मिश्र जी का साहित्यिक सृजन वैविध्यपूर्ण है। आपने बाल साहित्य के अतिरिक्त काव्य, नाटक, उपन्यास, जीवनी, आलोचना आदि विधाओं में तीस से अधिक स्तरीय ग्रन्थों का प्रणयन हिन्दी, अवधी भाषा में किया है। आपकी कुछ महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं - 'अभिनव गुप्त पादाचार्य, पारो, अमरूशतक का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन, समय बड़ा ही ढीठ, परजवटि, अस्ति कश्चित वाक्, समकालीन छंद प्रसंग, कुलांगना, खिड़की वाली सीट, भरतकालीन नाट्य कला, काव्याख्यान, शास्त्रार्थ, त्रिलोचन शास्त्री, बलभद्रदीक्षित पढ़ीस, कालाय तस्मै नमः आदि।

डॉ. भारतेन्दु मिश्र जी राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) की पाठ्य पुस्तक निर्माण एवं पुनरीक्षण समिति व अन्य प्रयोजनों में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की योजनाओं से सम्बद्ध हैं। बाल नाटकों का निर्देशन व मूल्यांकन भी कर चुके हैं।

डॉ. भारतेन्दु मिश्र जी को आपके दो दशकों से अधिक साहित्यिक अवदान को दृष्टिगत देश की नौ से

अधिक गैर सरकारी संस्थाओं ने सम्मानित व पुरस्कृत किया है, जिनमें राज्य स्तरीय नाटक लेखन पुरस्कार-1997, सेठ गोविंद दास नाटक लेखन सम्मान-2009, बाल नाटक लेखन पुरस्कार-2017, साहित्य गौरव सम्मान-2016, अवधी वारिधि उपाधि सम्मान-2018, नवगीत गौरव सम्मान-2018, सेवक स्मृति सम्मान-2016, कायाकल्प साहित्य भूषण सम्मान-2012 आदि। डॉ. भारतेन्दु मिश्र का बाल साहित्य बच्चों को नई दिशा एवं दृष्टि देने वाला है।

डॉ. भारतेन्दु मिश्र को 'डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- सी-45/वाई-4, दिलशाद गार्डन
नयी दिल्ली-110095
मोबाइल : 9868031384

डॉ. अंजीव अंजुम

बहुआयामी बाल साहित्य सर्जक और साहित्य समीक्षक, अनुवादक, सम्पादक डॉ. अंजीव अंजुम का जन्म 10 जुलाई, 1977 को आयराखेड़ा, मथुरा में माता श्रीमती शकुन्तला रावत एवं पिता शिव नारायण रावत के घर में हुआ।

हिन्दी विषय में परास्नातक, एम. फिल व पीएच.डी. की उपाधि से अलंकृत अंजीव अंजुम सम्प्रति अध्यापक व स्वतंत्र पत्रकार हैं। विगत सत्ताईस वर्षों से साहित्य सृजनरत रहकर पत्रकारिता से जुड़े हैं। आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। साथ ही दूरदर्शन व आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों के अतिरिक्त निजी चैनलों के लोकप्रिय साहित्यिक कार्यक्रमों में आपकी रचनाओं का प्रसारण भी होता रहता है।

प्रकाशित कृतियाँ - बाल नाटक लकड़ी की तलवार, नया सवेरा, मैं कूड़ादान हूँ, स्वच्छ रहे परिवेश।

बाल कहानियाँ -

जंगल की कहानियाँ, प्रकृति प्रेम की कहानियाँ, डर और अन्य कहानियाँ, नई दिशा एवं अन्य कहानियाँ, हौसला, परिवर्तन, उस्ताद, रंग में भंग, दो मजेदार बाल कहानियाँ, स्वच्छता की कहानियाँ, हौसला का घोंसला, उक्कू की भूल, विलमिल झिलमिल, करनी का फल, सच्चा उपहार, शेर की मूर्खता, पिकनिक, घमण्डी राजकुमार, रंगा सियार, हरी चिड़िया और मुनमुन, मेढू झूठ बोलता है, तनी मूँछें, स्वतंत्रता संग्राम की कहानियाँ, कहानी क्रांतिकारी की, सपना आदि।

बाल काव्य संग्रह -

बच्चों की फुलवारी, गीत वतन के गाये जा, कौन फलों का राजा, हम फूल हैं बगिया के, शरीर के अंग, अजब गजब फल, अलबेला पक्षा संसार, चतुर चौकड़ी, शेर की मूर्खता, चतुर हंस, घमण्डी राजकुमार ,चूहा चला हीरो बनने, लोमड़ी की चतुराई ,आस्था के स्वर देश भक्ति गीत संग्रह), नवस्वरों की गूंज (देश भक्ति गीत

संग्रह), ज्ञानवर्द्धक गीत - भाग प्रथम, ज्ञान वर्द्धक गीत भाग द्वितीय, भारत का जय गान (देश भक्ति गीत संग्रह), नमन देश के वीरों को (देश भक्ति गीत संग्रह), वंदे मातरम् (देश भक्ति गीत संग्रह)

बाल उपन्यास - रुस्तम, बगुलों की जीत, बाल आत्मकथा - प्रसिद्ध चार ऐतिहासिक स्थलों का मानवीकरण करते हुए लिखा है। बाल यात्रा वृत्तांत - दो कृतियां, क्रांतिकारी तथा महापुरुषों की जीवनी के अन्तर्गत 21 कृतियाँ हैं। बाल साहित्य की 18 कृतियाँ का अनुवाद आपने किया है। छत्तीसगढ़ी व राजस्थानी भाषाओं में कुल 22 कृतियाँ हैं।

इसके अतिरिक्त दो पहेली संग्रह, चार बाल आत्मकथा, दो बाल वृत्तांत, उन्नीस जीवनी साहित्य, उन्नीस अनूदित बाल साहित्य कृतियाँ, बाईस प्रादेशिक भाषाओं में अनुवादित बाल कहानियाँ, अंजीव अंजुम ने छत्तीस ग्रन्थों का सम्पादन भी किया है। ब्रज भाषा में भी आपका महत्वपूर्ण कार्य है।

डॉ. अंजीव अंजुम को उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों की नब्बे से अधिक गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा समय-समय पर पुरस्कृत व सम्मानित किया जा चुका है।

बाल साहित्य में विशिष्ट अवदान के लिए डॉ. अंजीव अंजुम को 'कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- राधा कोल्ड के पीछे, सादाबाद रोड,
राया, मथुरा-281204
मोबाइल : 7017328211, 8979352330

डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह

विज्ञान की भूमिका राष्ट्र की प्रगति और सम्पन्नता में कला और साहित्य की ही भाँति महत्वपूर्ण है, विज्ञान के अन्वेषण, शोध, प्रयोग व सिद्धान्तों को लिपिबद्ध कर जनमानस तक पहुँचाने के लिए विज्ञान लेखन अति महत्वपूर्ण है।

ऐसे ही विज्ञान लेखक डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह का जन्म 24 सितम्बर, 1976 को उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद के ग्राम मकदूमपुर में हुआ। डॉ. धीरेन्द्र ने लखनऊ विश्वविद्यालय से पीएच.डी. व अमेरिका की कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से डी.एससी. और अन्तर्राष्ट्रीय इकोनामिक्स विश्वविद्यालय, सार्क देश भारत से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त है।

डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह के विज्ञानाधारित दो सौ से अधिक लेखों का प्रकाशन बालवाणी के अतिरिक्त देश की अनेक स्तरीय बाल पत्रिकाओं में हो चुका है, जिनमें विज्ञान के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल-सहज भाषा में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त बीस से अधिक हिन्दी में बालोपयोगी पुस्तकों के साथ पचपन से अधिक पुस्तकों एवं समाचार पत्रों में बालोपयोगी चार सौ से अधिक आलेखों आदि का प्रकाशन हो चुका है।

डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह द्वारा कोविड-19 जागरूकता, चमत्कार के पीछे का विज्ञान, कौन बनेगा नन्हा कलाम, आजादी का अमृत महोत्सव आदि कार्यक्रमों को उत्तर प्रदेश शासन के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उ.प्र. द्वारा अभिप्रेरित जिला विज्ञान क्लब के माध्यम से बच्चों में सरल तरीके से विज्ञान में रुचि उत्पन्न कर छात्र-छात्राओं के मध्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह को अब तक सौ से अधिक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों-सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है, जिनमें पटेल रत्न पुरस्कार, विद्या भारती पुरस्कार, पं. गंगा प्रसाद मिश्र स्मृति सम्मान, एफलेटेड फेलो सम्मान, जवाहर लाल नेहरू एक्सीलेंस एवार्ड आदि। डॉ. सिंह बाल विज्ञान लेखन के

प्रति पूर्णनिष्ठा एवं समर्पण के साथ उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। बाल विज्ञान लेखन के प्रति डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह का समर्पण सराहनीय है।

डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह को 'जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- शीला भवन, मकदूमपुर, निकट-दशहराबाग,
बाराबंकी-225001 (उ.प्र.)
मोबाइल : 91&6393749501, 9415802408
ई-मेल : dbsinghbbk@gmail.com I dbsingh@dsmnru.ac.in

श्री ललित मोहन राठौर
(ललित शौर्य)

16 जून, 1990 को श्रीमती द्रोपदी राठौर एवं श्री जगत सिंह राठौर के घर में जन्में ललित मोहन राठौर (ललित शौर्य) सुविख्यात बाल साहित्यकार हैं।

प्रकाशित कृतियाँ :-

सृजन-सुगन्धि (कविता संग्रह), दादाजी की चौपाल (बाल कहानी संग्रह), कोरोना व रियर्स (कहानी संग्रह), द मैजिकल ग्लब्ज (कहानी संग्रह), फॉरेस्ट व रियर्स (कहानी संग्रह), स्वच्छता के सिपाही (कहानी संग्रह), जादुई दस्ताने (कहानी संग्रह), जल की पुकार (कहानी संग्रह)।

आपकी रचनाएँ चंपक, नंदन, बाल भारती, इंद्रप्रस्थ भारती, हँसती दुनिया, बाल किलकारी, देवपुत्र, बच्चों का देश, सहित्य अमृत, स्नेह, बाल प्रभात, बालभूमि, बाल प्रहरी, बाल भास्कर आदि राष्ट्रीय बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। दैनिक जागरण, अमर उजाला, नई दुनिया, राष्ट्रीय सहारा, राजस्थान पत्रिका, हिंदुस्तान, दैनिक भास्कर, स्टार समाचार, हरिभूमि, दैनिक ट्रिब्यून, आदि राष्ट्रीय समाचार पत्रों में नियमित रूप से लघुकथा, व्यंग्य, कविताओं आदि का प्रकाशन भी होता है।

दूरदर्शन, आकाशवाणी व निजी क्षेत्र के टी.वी. चैनलों में भी आपकी दस्तक है। आपके साहित्यिक अवदान को दृष्टिगत रखते हुए अनेक संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित/पुरस्कृत भी किया गया है, जिनमें मुख्य हैं - पं. प्रताप नारायण मिश्र सम्मान, सारस्वत सम्मान, हिन्दी भूषण सम्मान, पर्यावरण मार्तंड सम्मान, बाल साहित्यश्री सम्मान आदि। श्री ललित मोहन राठौर (ललित शौर्य) बाल साहित्य के युवा रचनाकार हैं, जिसकी दृष्टि आज के बच्चों के मनोनुकूल साहित्य सृजन करने की है।

बाल साहित्य में नित नवीन प्रयोग कर साहित्य जगत को समृद्ध कर रहे हैं। बाल साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अवदान के लिए श्री ललित मोहन राठौर (ललित शौर्य) को 'उमाकान्त मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान-2021' से अलंकृत करते हुए इक्यावन हजार रुपये की धनराशि भेंट कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

- ग्राम-कांधरपुर (सरस्वती नगर), पो-उमरसिया, जिला-बरेली, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 7351467702

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

बाल साहित्य सम्मानों से सम्मानित साहित्यकारों की सूची

सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान

वर्ष 1994 - श्रीमती मानवती आर्य्या
वर्ष 1995 - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ
वर्ष 1997 - श्रीमती विभा देवसरे
वर्ष 2013 - श्रीमती निर्मला सिंह
वर्ष 2014 - श्रीमती स्नेहलता
वर्ष 2015 - डॉ. शशि गोयल
वर्ष 2016 - श्रीमती नीलम राकेश
वर्ष 2017 - डॉ. शोभा अग्रवाल 'चिलबिल'
वर्ष 2018 - श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव
वर्ष 2019 - श्रीमती किरण सिंह
वर्ष 2020 - डॉ. मंजरी शुक्ला

सोहन लाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान

वर्ष 1994 - श्री रामस्वरूप दुबे
वर्ष 1995 - श्री रामवचन सिंह 'आनन्द'
वर्ष 1997 - श्रीमती विद्या गुप्ता
वर्ष 2013 - श्री सूर्यकुमार पाण्डेय
वर्ष 2014 - श्री रमाकान्त मिश्र 'स्वतंत्र'
वर्ष 2015 - डॉ. अजय जनमेजय
वर्ष 2016 - श्री सुन्दरलाल 'अरुणेश'
वर्ष 2017 - श्री अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'
वर्ष 2018 - श्री रामकुमार गुप्त
वर्ष 2019 - श्री गौरी शंकर वैश्व 'विनम्र'
वर्ष 2020 - श्री श्याम पलट पाण्डेय

निरंकार देव सेवक बाल साहित्य इतिहास लेखन सम्मान

वर्ष 1995 - डॉ. कृष्ण चन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबन्धु'
वर्ष 1997 - डॉ. चक्रधर नलिन
वर्ष 2013 - डॉ. कामना सिंह
वर्ष 2014 - डॉ. विजयानन्द तिवारी

अमृतलाल नागर बाल कथा सम्मान

वर्ष 1994 - श्री प्रेमनारायण गौड़
वर्ष 1995 - श्री मनोहर वर्मा
वर्ष 1997 - श्री राणा प्रताप सिंह
वर्ष 2013 - श्री संजीव जायसवाल 'संजय'
वर्ष 2014 - श्री रमाशंकर
वर्ष 2015 - श्री अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'
वर्ष 2016 - डॉ. दिनेश पाठक 'शशि'
वर्ष 2017 - श्री दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'
वर्ष 2018 - डॉ. राकेश चक्र
वर्ष 2019 - डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न'
वर्ष 2020 - डॉ. अनिता भटनागर जैन

शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान

वर्ष 1994 - श्री अनन्त कुशवाहा
वर्ष 1995 - श्री घनश्याम रंजन
वर्ष 1997 - श्री शफीक हसन सिद्दीकी
वर्ष 2013 - श्री विभाष पाण्डेय
वर्ष 2015 - श्री जावेद आलम शम्सी
वर्ष 2017 - श्री किशोर श्रीवास्तव
वर्ष 2018 - श्री सुखवन्त कलसी
वर्ष 2019 - श्री सुशील कुमार (सुशील दोषी)

लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान

वर्ष 1994 - श्री योगेन्द्रकुमार लल्ला
वर्ष 1995 - श्री जयप्रकाश भारती
वर्ष 1997 - डॉ. श्याम सिंह 'शशि'
वर्ष 2013 - श्री प्रेमचंद गुप्त 'विशाल'
वर्ष 2014 - श्री बन्धु कुशावर्ती
वर्ष 2015 - श्री निश्चल
वर्ष 2018 - डॉ. क्षमा शर्मा
वर्ष 2019 - श्री अरविन्द कुमार साहू
वर्ष 2020 - श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव

डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान

वर्ष 1994 - श्री विनोद रस्तोगी
वर्ष 1995 - श्री शंकर सुल्तानपुरी
वर्ष 1997 - डॉ. श्याम सुन्दर त्रिपाठी
वर्ष 2013 - डॉ. हेमन्त कुमार
वर्ष 2014 - डॉ. विनय कुमार मालवीय
वर्ष 2015 - श्री लायकराम 'मानव'
वर्ष 2016 - श्री अंशुमान खरे
वर्ष 2017 - सुश्री अंजू शर्मा
वर्ष 2018 - श्री सुशील कुमार सिंह
वर्ष 2019 - श्री गुडविन मसीह
वर्ष 2020 - श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह

आचार्य कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान

वर्ष 1994 - डॉ. मस्तराम कपूर 'उर्मिल'
वर्ष 1995 - डॉ. हरिकृष्ण देवसरे
वर्ष 1997 - डॉ. सुरेन्द्र विक्रम
वर्ष 2013 - श्री ओम प्रकाश कश्यप
वर्ष 2014 - डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष'
वर्ष 2018 - डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी
वर्ष 2019 - आचार्य नीरज शास्त्री

जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान

वर्ष 1995 - श्री शुकदेव प्रसाद
वर्ष 1997 - श्री श्याम नारायण कपूर
वर्ष 2013 - श्री राजीव सक्सेना
वर्ष 2014 - डॉ. जाकिर अली 'रजनीश'
वर्ष 2015 - डॉ. अरविन्द मिश्र
वर्ष 2016 - श्रीमती अलका प्रमोद
वर्ष 2017 - डॉ. अरविन्द दुबे
वर्ष 2018 - श्री संतोष कुमार सिंह
वर्ष 2019 - श्री अजय गुप्त
वर्ष 2020 - सुश्री कल्पना कुलश्रेष्ठ

उमाकान्त मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान

वर्ष 1994 - श्री यश मालवीय
वर्ष 1995 - श्री शिवचरण चौहान
वर्ष 1997 - श्री नागेश पाण्डेय 'संजय'
वर्ष 2013 - श्री परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव
वर्ष 2014 - श्री आशीष शुक्ला
वर्ष 2015 - श्री शादाब आलम
वर्ष 2017 - श्री शिवमोहन यादव
वर्ष 2018 - श्री अखिलेन्द्र तिवारी
वर्ष 2019 - श्री सतीश कुमार अल्लीपुरी
वर्ष 2020 - श्री सिराज अहमद

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

बच्चों की प्रिय पत्रिका बालवाणी (द्वैमासिक)

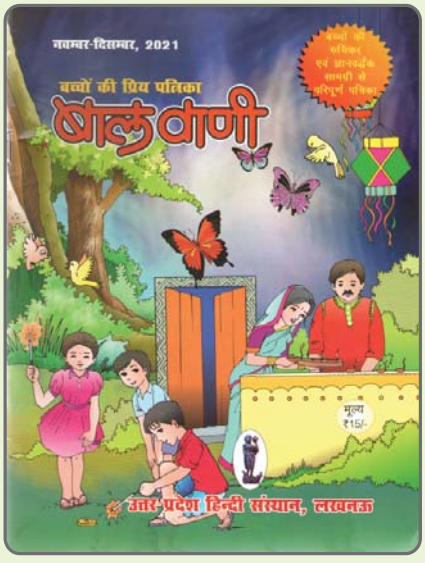

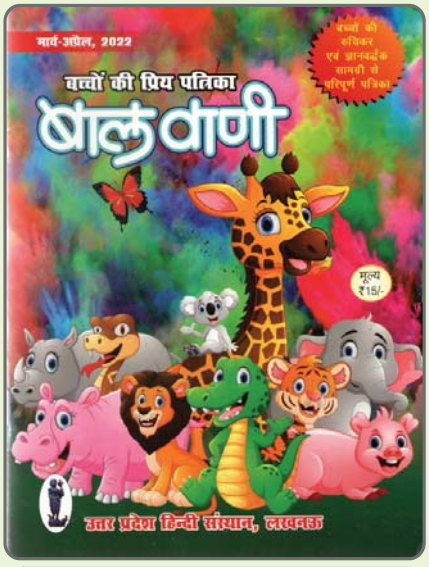

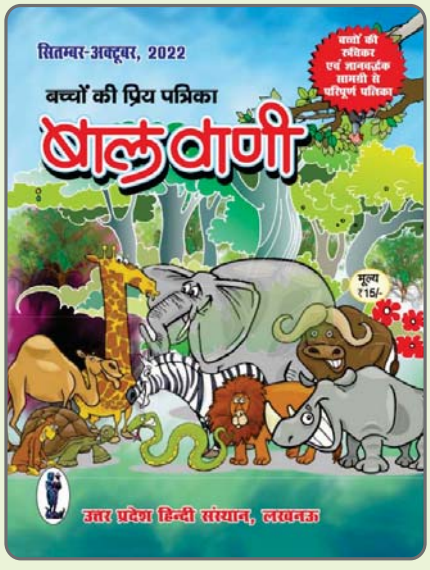

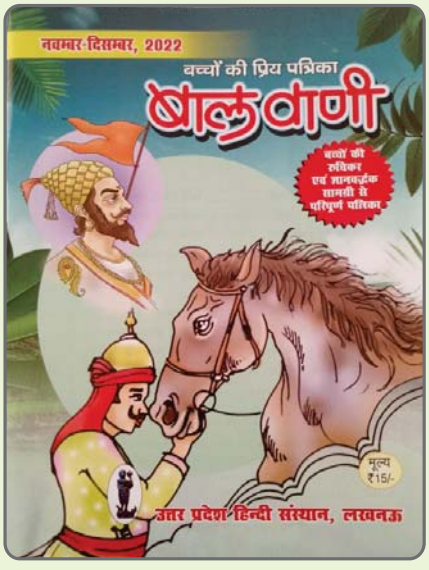

अभिलक्ष-पर्व
2021

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

के
बालोपयोगी प्रकाशन

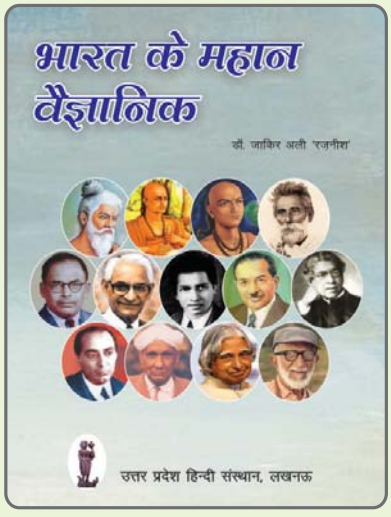

लेखक-डॉ. जाकिर अली 'रजनीश'
मूल्य : रुपये 150=00

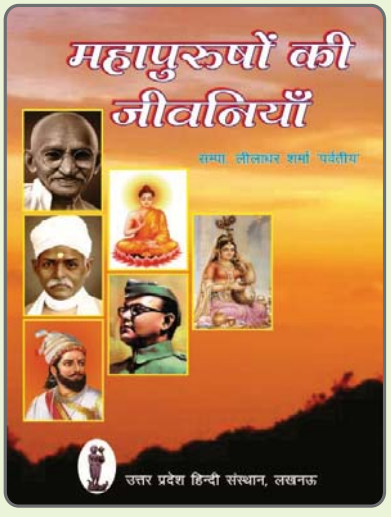

सम्पा.-लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'
मूल्य : रुपये 80=00

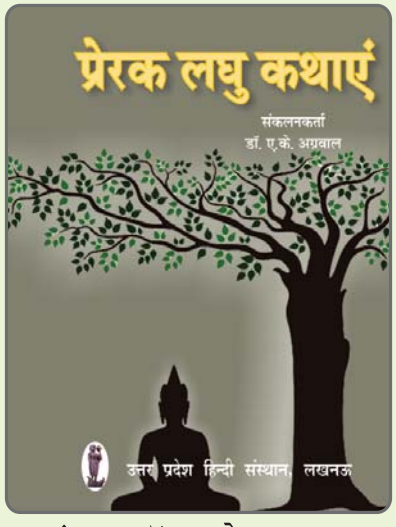

संकलन-डॉ. ए.के. अग्रवाल
मूल्य : रुपये 165=00

(संशोधित परिवर्द्धित संस्करण वर्ष 2013)
लेखक-डॉ. निरंकार देव सेवक
सम्पा.-डॉ. उषा यादव
मूल्य : रुपये 245=00

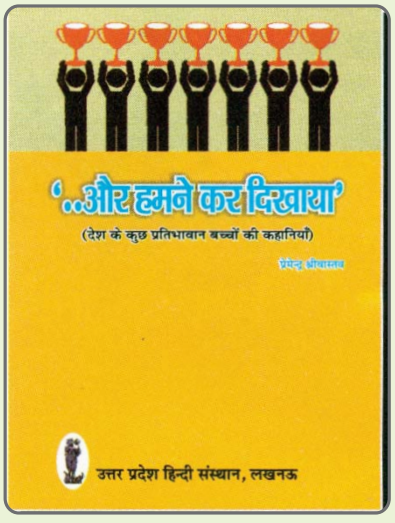

लेखक-प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव
मूल्य : रुपये 60=00

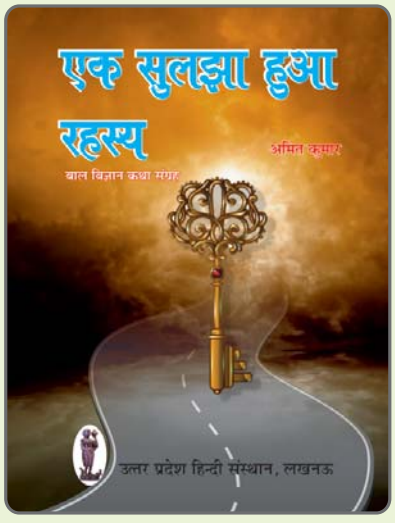

लेखक-अमित कुमार
मूल्य : रुपये 145=00

श्री जितेन्द्र कुमार
प्रमुख सचिव भाषा
उत्तर प्रदेश शासन

श्री आर.पी. सिंह
निदेशक
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

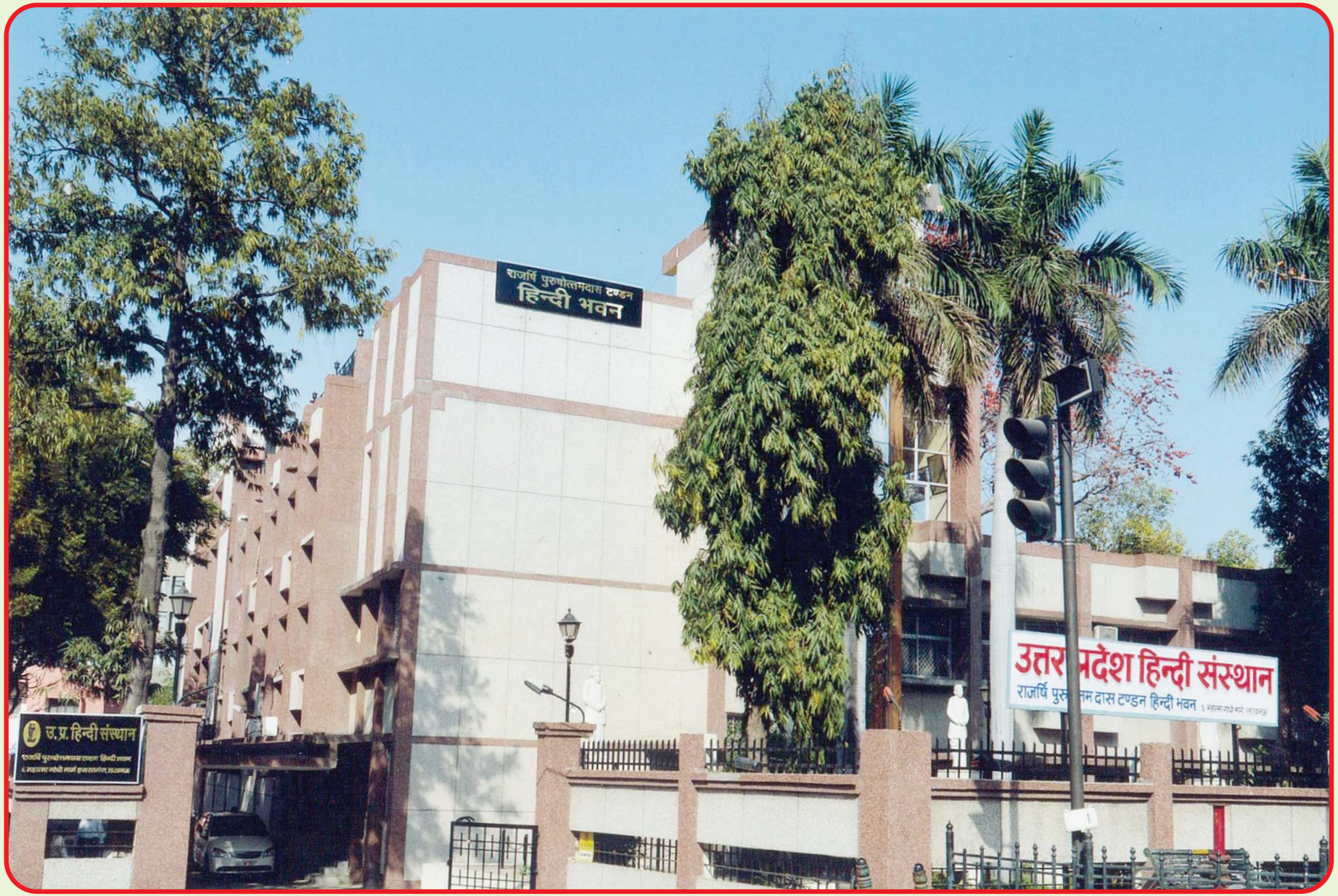

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ से मुद्रित तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन, 6, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से प्रकाशित। वेबसाइट : www.uphindisansthan.in ई-मेल : directoruphindi@yahoo.in दूरभाष : 0522-2614470